ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-2* Issue-9* December- 2017
Anthology : The Research

हिन्दी साहित्य में नारी का योगदान

कृष्ण कांत चौहान
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
जीवाजी विश्वविद्यालय,
ग्वालियर, म.प्र.

सारांश

यदि हम एक आदर्श समाज की स्थापना का स्वप्न साकार करना चाहते हैं, तो हमें देश की आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाली नारी को सारे हक–अधिकार, समानता की कसौटी पर देने होंगे, क्योंकि सदियों से तमाम वेदनाओं एवं वर्जनाओं बंधनों से बंधी नारी आज भी पीड़ित है, शोषित है, असुरक्षित है, उपेक्षित है। इसी नारी ने अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व की रक्षार्थ साहित्य–सृजन करके कई मील के पत्थर स्थापित किये है, जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य में नारी का योगदान अद्वितीय है, प्राचीनतम है, प्रभावी है।

मुख्य शब्द : नारी, साहित्य, प्रथा, शोषण, संघर्ष, योगदान।

प्रस्तावना

प्राचीनकाल से ही पुरूष प्रधान समाज की नियति और नियत नारी को पराधीन और अशिक्षित रखकर उसे अपने मनोरंजन और वैभव विलासिता के किसी उत्पाद की भांति भोगने की रही है। भारतीय समाज में परंपरा और प्रथाओं के नाम पर महिला उत्पीड़न और शोषण की एक लंबी श्रृंखला विद्यमान रही है। सतीप्रथा, बाल–विवाह, बेमेल–विवाह, विधवा विवाह निषेध, दहेज प्रथा, घरेलू हिंसा, बलात्कार, छेड़खानी, यौन–शोषण ब्लेकमेलिंग आदि नारी–विकास में अवरोधक घटकों ने भी नारी मन को आंतरिक रूप से तोड़ने का कुत्सित प्रयास किया है, परंतु धन्य है वो नारी साहित्यकार, जिन्होंने अपनी कलम से इस प्रकार के पुरूष जनित नारी–रोधी घटकों के खिलाफ अपने स्वर मुखरित किये है। महिला साहित्यकारों ने सदैव अपनी समकालीन विषम परिस्थितियों पर लेखन कार्य कर अपने सृजन धर्म का बखूबी पालन किया है, जिससे नारी को अपने युग में समानता और सम्मान से जीने का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

''स्त्री को लेकर भारतीय साहित्य, दर्शन एवं धर्मशास्त्रों में चिन्तन की सुदीर्घ परम्परा रही है जहाँ स्त्री की सम्पूर्ण सत्ता को भोग्या, अबला, ललना, कामिनी, रमणी आदि विशेषणों के साथ हेय एवं पुरुष सापेक्ष रूप में चित्रित किया गया है। इसका प्रमुख कारण यह है कि प्राचीन एवं मध्ययुगीन सभी रचयिता एवं टीकाकार पुरुष थे। दूसरे, मातृसत्तात्मक व्यवस्था के अपदस्थ होने के बाद से समाज में पितृसत्तात्मक व्यवस्था का विधान रहा है। फलतः स्वाभाविक था कि पुरूष के सन्दर्भ में पुरूष दृष्टि द्वारा स्त्री को देखा जाता। इसलिए पुरूष की श्रेष्ठता, सम्मान, स्थान, शक्ति, अधिकार और स्वार्थ की रक्षा के लिए धर्मशास्त्रों ने अनेक ऐसे आप्तवचनों, सूत्रों, श्लोकों की रचना की जिन्होंने स्त्रियों के जीवन को अनेक सामाजिक–नैतिक अर्गलाओं में बाँध दिया।'' [1]

जिस भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग कहा गया, उसमें भी अनेकों संत कवियित्रियों का प्रादुर्भाव रहा, जिनके नाम काल के गाल में समा गए। इस युग की कवियित्रियों ने पुरूषों द्वारा दी गई शारीरिक और मानसिक पीड़ा और उनके विद्रोह का उल्लेख अपने साहित्य में करके नारी मुक्ति की दिशा तय की।

कृष्ण भक्ति मार्गी मीरा का हिन्दी साहित्य को अद्वितीय योगदान रहा है। मीरा के पद अपने समय की नारी–अभिव्यक्ति और रूढ़ियों के खिलाफ संघर्ष की आधारशिला रखने में बहुत हद तक सफल रहे हैं। मीरा के ऐसे पद संपूर्ण राजस्थान क्षेत्र और शोषित पीड़ित जातियों द्वारा ग्राह्य कर लिये जाने पर अमर हो गए।

इस प्रकार मीराबाई को हिन्दी साहित्य की पहली स्त्री विमर्शकार कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। ऐसा माना जाता है कि कबीर के साथ लोई ने काव्य रचना की, इसी क्रम में यह कहना भी सुसंगत होगा कि तुलसीदास के साथ–साथ रत्नावली भी कविता लेखन में रूचि रखती थी। साथ ही कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की जीवन–संगिनी शिवरानी देवी भी साहित्य – सृजन से पीछे नहीं हटीं।

''मीरा का काव्य स्त्री–मानस की पीड़ा को शब्द देता है। मीरा के युग में स्त्री आत्माभिव्यक्ति के लिए स्वतन्त्र नहीं थी। वह पुरूष के उपयोग–उपभोग के लिए थी और पुरूष की दृष्टि से देखी जाती थी। स्त्री सुख–दुख, अपने– आकांक्षाएँ, वर्तमान–भविष्य उसके अपने भीतर निहित नहीं थे, पुरूष–समाज द्वारा प्रत्यारोपित किए जाते थे। इसलिए स्त्री की नजर से स्त्री–मानस को पढ़ने का संस्कार और आवश्यकता मध्ययुग में कहीं दिखाई नहीं देती।''[2]

हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाने में अनेक महिला साहित्यकारों ने अपना योगदान दिया है, जिनमें सुमति, शोभा, सीता, झाली, उमा, प्रभुता, भतियानी, उबीठा, गोपाली, कुंवरि, गंगा, गौरी, गणेश देवरानी, कला लखा, कृतगढ़ी, मानुमति, सुचि, सतभामा, जमुना, कोली, रामा, मृगा, देवा, देभक्तन, विश्रामा, जुगजेवा की कमला, देवकी, हीरा हरिचेरी पोषे, मीरा, लल्लेश्वरी, जनाबाई प्रमुख कवयत्रियां रही है।

इसके अतिरिक्त सुभद्राकुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, इस्मत चुगताई, जना बेगम, अमृता, प्रीतम, मृदुल सिन्हा, इंदिरा दांगी, चित्रा मुदगल, शोभा डे, मृणाल पाण्डे, निर्मला देशपाण्डे, अलका सरावगी, मैत्रयी पुष्पा, ऊषा प्रियवंदा, मालती जोशी, कृष्णा अग्निहोत्री, कृष्णा सोबती, सुधा अरोड़ा, मन्नू भंडारी, ममता कालिया, मेहरून्निसा परवेज, लता अग्रवाल, निर्मला भुड़ारिया, डॉ. कामिनी, मीनाक्षी स्वामी, प्रभा खेतान, राजी सेठ, गीता श्री आदि ने भी अपनी कलम की सृजनशीलता से हिन्दी साहित्य को परिपूर्ण करके अपना अद्वितीय योगदान दिया।

मन्नू भंडारी, ऊषा प्रियवंदा एवं कृष्णा सोबती लगभग छठे दशक से लिखती चली आ रही है और प्रसन्नता की बात है कि वे अब भी लिख रही है। मन्नू भंडारी की कहानियां अपनी सादगी में प्रमाणिक अनुभूति की कहानियां है। ऊषा प्रियंवदा के कथा–संसार में शिल्प की सजगता और विषय वस्तु की व्यापकता है, तो दूसरी ओर कृष्णा सोबती स्त्री–पुरूष के मध्य उपजे सेक्स संबंधों को बोल्डनेस के साथ पेश करने में माहिर है। इसी श्रृंखला में मृदुला गर्ग का नाम भी बड़ी शिद्दत के साथ लिया जाता है। इसके अतिरिक्त सूर्यबाला गहरे यथार्थ और मानवीय रिश्ते की कहानीकार हैं, जो कि हिन्दी साहित्य जगत में अमर बेल के सदृश्य स्थापित हो रही है।

अपनी कालजयी रचनाओं से हिन्दी साहित्याकाश में आकाशगंगा की तरह उज्जवलित महान महिला साहित्यकार ''सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म इलाहाबाद एक संपन्न ठाकुर परिवार में हुआ था। सुभद्राजी ने मुख्यतः दो रस अंकित किए हैं –'वीर' तथा ''वात्सल्य''। इसमें एक तरफ नारी सुलभ ममता और दूसरी ओर पद्मिनी के जौहर की भीषण ज्वाला के साथ–साथ पारिवारिक जीवन के मोहक चित्र भी अंकित किए हैं। बहुत कम उम्र में ही सन् 1948 ई0 में एक मोटर दुर्घटना में आपकी अकाल मृत्यु हो गई।''[3] अपने कथा संसार में सुभद्राकुमारी चौहान ने पारिवारिक जीवन के आकर्षक एवं सजीव चित्र भी उकेरे है। इसके अतिरिक्त झांसी की रानी के अदम्य साहस और बलिदान का भी सफल चित्रण करने में भी वे सफल हुई हैं। सुभद्रा जी की मुकुल, त्रिधारा, बिखरे मोती, उन्मादिनी, सीधे–साधे चित्र, झांसी की रानी और वीरों का कैसा हो बसंत आदि प्रमुख कृतियां है।

सुविख्यात महिला साहित्यकार डॉ. मृदुला सिन्हा, हिन्दी साहित्य की प्रमुख कथाकार एवं निबंध लेखिका है जिनके आठ उपन्यास, पांच निबंध संकलन सात कहानी संग्रहों सहित अनेक महत्वपूर्ण संग्रहों का भी प्रकाशन हुआ है।

''सम्मानीया मृदुला सिन्हा का मूल अभिप्रेत समाज जागरण एवं लोकमंगल है और इस हेतु उनकी लेखनी सतत् गतिशील है। राजकीय कार्यों की असीम व्यस्तता के बाद भी वह जीवन के शाश्वत मूल्यों तथा सांस्कृतिक मान बिन्दुओं के संरक्षण संवर्द्धन निमित्त अपने सृजनधर्मी व्यक्तित्व को निरंतर सक्रिय बनाए हुए हैं।''[4]

अपने अमर कथा–उपन्यास साहित्य सृजन में समाज एवं नारी अन्योन्याश्रित संबंधों को अत्यंत सजीवता और गंभीरता से रेखांकित करने वाली महिला साहित्यकार कृष्णा सोबती ने भी हिन्दी साहित्य जगत के हवन में अपनी पवित्र आहुति दी है।

सुविख्यात महिला साहित्यकारों में सम्मिलित अमृता प्रीतम का रचना संसार भी अत्यंत समृद्ध है। पांच कहानी संग्रह, चौदह उपन्यास, दो आत्मकथा के अतिरिक्त दो संस्मरण अमृता प्रीतम की प्रमुख कृतियां रही है।

अपने चौदह कहानी–संग्रहों और तीन उपन्यासों के माध्यम से हिन्दी की सेवा करने पर मेहरून्निसा परवेज को साहित्य भूषण सम्मान,

महाराजा वीरसिंह जूदेव पुरूस्कार सुभद्राकुमारी चौहान पुरूस्कार, पदमश्री आदि प्राप्त हो चुके हैं।

नारी संवेदनाओं और अभिव्यक्ति को पुरूष प्रधान समाज में महिला मंडित कराने वाली मन्नू भंडारी का भी हिन्दी साहित्य को अद्वितीय योगदान है। अपने उपन्यासों एक इंच मुस्कान, आपका बंटी, महाभोज, स्वामी, सात कहानी–संग्रहों, नाटक–बिना दीवारों का घर, आत्मकथा– एक कहानी यह भी' का सृजन कर अपनी पीढ़ी के साथ न्याय किया है।

महिला साहित्यकारों में तेजी से उभरता एक नाम गीताश्री का भी है। ''हिंदी कथा साहित्य में गीताश्री एक परिचित नाम है। हिन्दी की प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिकाओं–हंस, नया ज्ञानोदय, पाखी, कथादेश, इरावती, बहुवचन, लमही, निकट, संबोधन, आऊटलुक, शुक्रवार आदि में आपकी कहानियां निरंतर प्रकाशित और चर्चित हुई हैं। अब तक गीताश्री के तीन कहानी–संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं: 'प्रार्थना के बाहर और अन्य कहानिया' (2013) 'स्वप्न', साजिश और स्त्री' (2015) और 'डाउनलोड होते हैं सपने' (2017)''[5]

नारी साहित्यकारों ने प्रारंभ से अब तक हिन्दी साहित्य को अपने सतत् योगदान से कृतार्थ किया। इसके बावजूद महिला साहित्यकारों को साहित्य जगत में वो सम्यक स्थान नहीं मिल पाया है, जिसकी वो अधिकारिणी है। फिर भी नारी अपने साहित्यिक योगदान हेतु सक्रिय हैं।

''स्त्रियों ने कभी नहीं सोचा कि पुरूष अपनी महानता को गढ़ता है, अपने शब्दजाल से वह मसीहा का भ्रम निर्मित करता है। यह पुरूष का अपना नेटवर्क है, जिसकी बदौलत वह स्त्री की प्रोग्रामिंग करता है, उसका संचालन करता है। शोधकर्ता, इतिहासज्ञ, आलोचकवृन्द जितनी मेहनत पुरूष–लेखन पर करते हैं, उतनी स्त्री–लेखन पर कभी नहीं करते। कबीर पर जितने शोधकार्य हुए, मीरा पर नहीं हुए। सार्त्र को फ्रांसिसी साहित्यिक जगत में ज्यादा सम्मान मिला, मगर सीमोन द बोउवा की उपेक्षा की गई। निराला पर चर्चा अधिक है, लेकिन महादेवी श्रद्धा की पात्र होते हुए भी अतीत हो गई हैं। स्त्री के प्रति यह उपेक्षा पितृसत्तात्मक समाज की बुनावट में अन्तर्निहित है।'' [6]

निष्कर्ष

कहने का तात्पर्य यही है कि हिन्दी साहित्य में नारी का योगदान सदैव अविस्मरणीय रहा है, बात चाहे समाज या परिवार को आदर्श स्वरूप में समर्पित करने की हो या नारी वर्ग को पुरूष की दोहरी एवं संकुचित मानसिकता के खिलाफ रचनात्मक, सकारात्मक एवं सृजनात्मक साहित्यिक क्रांति का शंखनाद करने की हो, नारी का योगदान सदैव अविस्मरणीय एवं वंदनीय रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *अग्रवाल रोहिणी – साहित्य का स्त्री–स्वर – वर्ष 2015 – साहित्य भण्डार इलाहाबाद – पृ. 7*
2. *वही – पृ. 30*
3. *चौबे संतोष, कथा मध्यप्रदेश : खण्ड–1, विरासत, वर्ष 2017 विश्व कला एवं संस्कृति केंद्र, जिला रायसेन – पृ. 12*
4. *तोमर जगदीश – इंगित – लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकार डॉ. मृदुला सिन्हा की सृजन दृष्टि – वर्ष 2015 – अविनाश साहू, ग्वालियर – पृ. 7*
5. *होता अरुण, हंस – वर्ष–2017, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली – पृ. 72*
6. *खेतान प्रभा – औरत अस्तित्व और अस्मिता महिला लेखन का समाजशास्त्रीय अध्ययन – हमारी भूमिका – राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली – वर्ष 2013 – पृ. 17*